सूरज ने अंतरिक्ष को साफ किया

पिछले कुछ वर्षों में सूरज अति सक्रिय रहा है। इसके बाकी परिणाम जो भी हों, मगर एक अच्छा काम हो गया है। अंतरिक्ष में इन्सानों ने जो मलबा बिखेरा था, उसकी कुछ हद तक सफाई हो गई है।

दरअसल, अंतरिक्ष के जिस हिस्से में अधिकांश कृत्रिम उपग्रह चक्कर काटते हैं, वहां इनकी वजह से काफी मलबा इकट्ठा होता रहता है। इसके चलते उस क्षेत्र में उपग्रहों की सुरक्षा को खतरा बना रहता है।

पिछले 11 वर्षों में सूरज थोड़ा ज़्यादा ही सक्रिय रहा है। इस सक्रियता का चरम 2013 में आने की संभावना है। जैसे-जैसे यह सक्रियता बढ़ेगी सूरज से आने वाली किरणें पृथ्वी के बाह्य वायुमंडल को ज़्यादा गर्म करेंगी। इस हिस्से को थर्मोस्फीयर कहते हैं। जब यह हिस्सा गर्म होगा तो यह बाहर की ओर फैलेगा। इस फैलाव की वजह से वायुमंडलीय कण उस मलबे के संपर्क में आएंगे जो वायुमंडल से बाहर घूम रहा है। इस संपर्क की वजह से मलबे के कणों का वेग कम हो जाएगा और वे पृथ्वी की ओर गिरेंगे, जहां वायुमंडल के संपर्क में आकर गर्म होकर जल जाएंगे। वैसे भी देर-सबेर इन कणों को वायुमंडल में प्रवेश करना ही है, मगर उपरोक्त परिस्थिति में ये समय से पहले ही वायुमंडल में प्रवेश करके नष्ट हो जाएंगे।

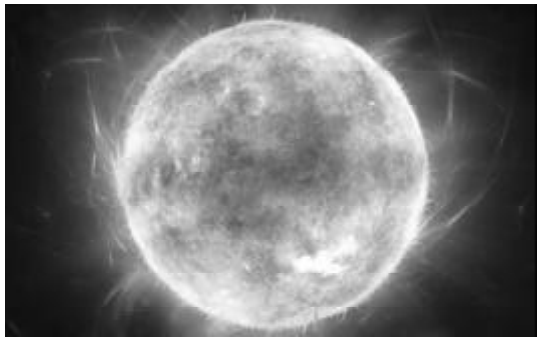

नासा ने कक्षीय मलबे सम्बंधी अपनी त्रैमासिक पत्रिका *ऑर्बाइटल डेब्रि क्वार्टरली रिव्यू* में बताया है कि फेंग्यून 1 सी उपग्रह के मलबे को इस तरह नष्ट होते देखा गया है। फेंग्यून 1 सी वह उपग्रह है जिसे चीन ने छोड़ा था और फिर अपनी उपग्रह-भेदी मिसाइल के परीक्षण के दौरान 2007 में तोड़ दिया था। इसके अलावा, 2009 में रूस के कॉसमॉस 2251 और यूएस के इरिडियम 33 की टक्कर से पैदा हुए मलबे को भी जलकर नष्ट होते देखा गया है।

वैसे गौरतलब बात यह है कि अंतरिक्ष की यह मुफ्त की सफाई थोड़े समय की ही राहत प्रदान करेंगी क्योंकि जलवायु परिवर्तन के चलते पृथ्वी तो गर्म होगी जबकि थर्मोस्फीयर ठंडा होगा और स्थिति पहले जैसी हो जाएगी। यानी चांदनी चार दिन की ही है। ***(स्रोत फीचर्स)***